ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को आर्यजगत की ओर से
रंगों के उत्सव - नव सस्येष्टि यज्ञ
होलिकोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 44, अंक 17 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 मार्च, 2021 से रविवार 21 मार्च, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में वेद प्रचार मंडलों के सहयोग से आर्यसमाज के संस्थापक, युग प्रवर्त्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 197वां जन्मोत्सव समारोह

विभिन्न स्थानों पर यज्ञ-प्रवचन एवं भव्य भजन संध्याओं के आयोजन

कीर्ति नगर, महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर, प्रशान्त विहार, श्रीनिवासपुरी सहित अन्य कार्यक्रमों के विवरण एवं झलकियां

लॉकडाउन में जन सेवा करने वाले आर्य जनों को दिया गया कोरोना योद्धा सम्मान

भारत की पुण्य भूमि ऋषि मुनियों की जन्मस्थली रही है। इस बृहद श्रंखला में समस्त संसार पर उपकार करने वाले, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी अग्रणी है। इस वर्ष महर्षि दयानंद का जन्मोत्सव फाल्गुन कृष्ण दशमी, विक्रमी संवत 2077 तदनुसार 8 मार्च 2021 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में भारत की राजधानी के विभिन्न क्षेत्रों में सभी आर्य समाजो, शिक्षण संस्थाओं की ओर से पूरे उमंग,उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। महर्षि के जन्मोत्सव की तैयारी महीनों पूर्व ही प्रारंभ हो गई थी,लेकिन कोरोना के चलते कई तरह की रुकावटों के बावजूद पूरे संयम और सावधानी के साथ कार्यक्रमों के आयोजन सोल्लास सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। दिल्ली सभा के तत्वावधान में लगभग सभी आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं, वेदप्रचार मंडलों के सम्मानित अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों की सहभागिता प्रशसनीय रही,सभी ने पूरी श्रद्धा निष्ठा का परिचय देते हुए अपना योगदान दिया, इसके लिए सभी महानुभावों का बहुत बहुत अभिनन्दन और आभार। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सन्देशों में मानव सेवा और परोपकार को प्रमुख मानते हुए सभा ने कोरोना के संकट काल में जिन आर्य जनों ने अपनी ओर अपने परिवार की परवाह न करते हुए आर्य समाज के अंर्तगत मानव सेवा के प्रेरक कीर्तमान स्थापित किए थे उन महानुभावों को सम्मान पत्र भेंट करते हुए अत्यंत गौरव महसूस किया, इस अवसर पर 7 मार्च 2021 को आर्य समाज प्रशान्त विहार, आर्य समाज मलकगंज, आर्य समाज कीर्तिनगर, डी ए वी स्कूल श्रेष्ठ विहार के सामने वाले पार्क में, मंडावली में और महर्षि दयानंद गो सवर्धन केंद्र गाजीपुर में भव्य आयोजन सम्पन्न हुए, 8 मार्च 2021 को आर्य समाज श्रीनिवास पुरी में कार्यक्रम सम्पन हुआ, उरोक्त कार्यक्रमों में 51 कुण्डीय यज्ञों के आयोजन, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जन्म, जीवन, तप, त्याग, परोपकार, सेवा, साधना, शिक्षा,वेदों का उद्धार, प्रचार, प्रसार, कुरीतियों, कुप्रथाओं का निराकरण आदि विषयों पर आधारित भजन संध्या, प्रवचन के कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। इन सभी महत्वपूर्ण समाचारों को आर्य सन्देश में प्रमुखता से सचित्र प्रकाशित करते हुए हमें गर्व अनुभव हो रहा है। - सम्पादक

पश्चिम दिल्ली क्षेत्र - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा एसडी पब्लिक स्कूल, रामा रोड कीर्ति नगर में 7 मार्च 2021 को महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 197वें जन्मदिवस का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस विशेष कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ, जिसके ब्रह्मा श्री दिनेश शास्त्री जी थे, 6 यज्ञकुडों पर यजमान बनने वालो में श्रीमती संध्या जी एवं श्री नीरज आर्य जी, श्रीमती जमुना देवी जी एवं श्री सुखबीर सिंह आर्य जी, श्रीमती निर्मल प्रभा जी एवं श्री वेदभूषण जी, श्रीमती विमल जी एवं श्री सुंदर बुद्धि राजा जी, श्रीमती अनीता जी एवं श्री नरेश मनोचा जी, श्रीमती आशा आनंद जी, श्रीमती चंद्रमुखी जी, श्रीमती विद्यावती आर्या जी, श्रीमती एवं श्री राकेश आर्य जी, श्रीमती सीता जी एवं श्री राजू आर्य जी, श्रीमती एवं श्री बिट्टू आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने यज्ञ में आहुतियां देकर स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव किया। इसके अतिरिक्त 14 दंपति परिवार रेशमा कैंप 5/ 35 से भी यजमान बने। इस अवसर पर कीर्ति नगर से श्री मनोहर लाल कुमार जी, चेयरमैन सनातन धर्म सभा, श्रीमती किरण एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी, श्री अजीत वर्मा जी, श्री सुरेश तेजी जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, श्री प्रवीण आर्य जी, श्री अशोक खरबंदा जी, श्री गुलशन खरबंदा जी, पश्चिमी दिल्ली से श्री विक्रम नरूला जी, उप प्रधान आर्य केंद्रीय सभा, श्री शिव कुमार मदन जी, उप प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री वीरेंद्र सरदाना जी महामंत्री एवं डॉ मुकेश आर्य जी कोषाध्यक्ष पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, श्री रवि भूषण चड्ढा जी, आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग, श्री यशपाल आर्य जी, महावीर नगर, श्री योगेश आर्य जी, पश्चिम पंजाबी बाग, श्री जितेंद्र पाहुजा जी एवं श्री अशोक खुराना जी, श्रद्धापुरी, श्री संदीप भारद्वाज जी, श्रीमती सुनीता पासी जी, आउटर रिंग रोड विकासपुरी तथा विभिन्न आर्य समाजो के

- शेष पृष्ठ 3, 5 एवं 7 पर

पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्यसमाज कीर्ति नगर के सहयोग से सनातन धर्म पब्लिक स्कूल रामा रोड, कीर्ति नगर में आयोजित जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर यज्ञ-भजन एवं प्रवचन

श्री राममन्दिर निर्माण निधि हेतु एक करोड रुपये की राशि का समर्पण

महाशय राजीव गुलाटी जी ने एम.डी.एच. परिवार की ओर से सौंपा चैक

श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में बन रहे श्री राम मन्दिर निर्माण निधि के लिए दिनांक 9 मार्च, 2021 को एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय श्री राजीव गुलाटी जी ने एक करोड़ रुपये की धनराशि का चैक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त संघचालक श्री कुल भूषण आहुजा जी को समर्पित किया। इस असवर पर धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति गुलाटी, सांसद श्री प्रवेश वर्मा, प्रान्त कार्यवाह श्री भारत भूषण एवं श्री प्रेम कुमार अरोड़ा जी भी उपस्थित रहे।

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

हे इन्द्र!

इन्द्र! त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम्।
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून्।। -ऋक्. 4/19/6
ऋषिः **वामदेवः**।। देवता - **इन्द्रः**।। छन्दः **भुरिक्पङ्क्तिः**।।

शब्दार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र! **त्वम्** = तू **तुर्वीतये** = शत्रुओं का नाश करने वाले के लिए **वय्याय** = और दूसरों से प्राप्तव्य, वाञ्छनीय भक्त पुरुष के लिए महीं **अवनीम्** = इस महती पृथिवी को **विश्वधेनाम्** = सब-कुछ देने वाली, सब प्रकार से प्रीणन करनेवाली और **क्षरन्तीम्** = अभीष्ट फलों को प्राप्त करानेवाली, उनसे पूरित करनेवाली (बना देता है) तथा **एजत्** = बहुत उछलते हुए, तूफानी **अर्णः** = समुद्र जल को **नमसा** = अपने नमः द्वारा, वज्र द्वारा **अरमयः**= रममाण, शान्त कर देता है, एवं **सिन्धून्** = समुद्रों को **सुतरणान्** = सुगमता से तरने योग्य **अकृणोः** = कर देता है।

विनय- 'हे इन्द्र! तू उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता अपने-आप करता है।' इसलिए जो मनुष्य स्वयमेव अपनी विघ्न-बाधाओं को हटानेवाला, अपने मार्ग के शत्रुओं का विनाश करनेवाला 'तुर्वीति' होता है, उसके लिए तू मार्ग साफ कर देता है, परन्तु ऐसा मनुष्य दूसरें से प्राप्तव्य, वाञ्छनीय, 'वय्य' भी अवश्य होता है। तेरा भक्त कभी केवल विनाश करनेवाला घोर नहीं होता है, किन्तु दूसरों का सहारा, सौम्य भी अवश्य होता है। जो तेरा सच्चा भक्त है वह जहाँ मार्ग के राक्षसों, असुरों का संहार करनेवाला होता है, वहाँ वह जनता की सेवा करने वाला, उनका आश्रय, प्रेमभाजन भी अवश्य होता है। ऐसे अपने सच्चे उत्कृष्ट भक्त के लिए, हे इन्द्र! तू कुछ उठा नहीं रखता है। इस 'तुर्वीति' और 'वय्य' पुरुष के लिए तू इन महान् पृथिवी को अभीष्ट फल दुहनेवाली एक बड़ी गौ बना देता है और बड़े-से-बड़े समुद्रों को 'सुतरण' कर देता है। उसके मार्ग में चाहे स्थल आये या जल, तू किसी वस्तु को बाधक नहीं रहने देता। जब मनुष्य 'तुर्वीति' और 'वय्य' होकर तुझे पाने निकलता है, तेरे पन्थ का पथिक बनता है तो उसके राह में खड़ी हुई बड़ी-से-बड़ी पार्थिव बाधाओं को तू बाधाएँ नहीं होने देता, किन्तु अपनी कृपा से उन्हें सब-कुछ देनेवाली, अपेक्षित आवश्यकताओं को पूरा करनेवाली, विविध सहायताओं के रूप 'नमः' में बदल देता है। उसके मार्ग में पड़नेवाले बड़े-से-बड़े तूफानों समुद्रों को भी तू अपने 'नमः' द्वारा शान्त कर देता है। मानो क्रुद्ध-से-क्रुद्ध उत्तेजित समुद्रों को अपने 'नमः' नामक सबको नमानेवाले शान्ति-वज्र द्वारा तू शान्त, रममाण, प्रसन्न कर देता है और तब उनके जल उस भक्त को डुबा देने की जगह उसे पार तराने में सहायक हो जाते हैं। यह सब, हे इन्द्र! तेरी महिमा है, तेरी अपने भक्तों के प्रति करुणा है। नहीं, मैं कहूँगा कि यह सब 'तुर्वीति' और 'वय्य' होने का सामर्थ्य है, तेरे ऐसे उत्कृष्ट भक्त बनने का माहात्म्य है। निःसन्देह, हे इन्द्र! तुम हमें भी विपत्तियों के भारी-से-भारी पहाड़ों को लँघा दोगे, भयंकर-से-भयंकर समुद्रों को तरा दोगे, बस केवल हमारे 'तुर्वीति वय्य' बनने की देरी है, बस तुम्हारे ऐसे पूरे भक्त बनने की देरी है।

साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ईसाइयत का काल्पिनिक अंधविश्वास : पवित्र सन्दूक

रेडर्स ऑफ द लॉस्ट आर्क यह 1981 में बनी एक अमरीकी रोमांचकारी फिल्म है जिसमें एक जादुई संदूक की कल्पना की गयी है। अब उसी पवित्र संदूक को लेकर पूर्वी अफ्रीकी देश इथियोपिया में करीब 800 लोगों के मारे जाने की खबर आई है। यानि सेना गोली चलाती रही लोग गोलियों के सामने आते रहे और देखते देखते बड़ी संख्या में लोग मारे गये। ऐसे में दुनिया के लिए सवाल बना कि आखिर इस पवित्र संदूक में क्या है और क्यों हजारों लोग जान देने के लिए इथियोपिया की सेना से भिड़ गये।

असल में बहुत पहले इस्राइलियों ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया और उसके अन्दर दस आज्ञाओं के साथ दो पत्थर भी रख दिए। इसके बाद संदूक के बारे में भ्रामक प्रचार किया गया कि यह एक पवित्र संदूक है जो इसराइल वासियों को मिस्र की दासता से मुक्त कराएगा। इसके बाद किंग सोलोमन ने अपने शासन के दौरान जेरूसलम में एक मंदिर का निर्माण किया और इस संदूक को उसमें रख दिया। इस प्रकार सन्दूक को इस्राएलियों द्वारा स्वयं ईश्वर के अवतार के रूप में पूजा जाने लगा।

फिर 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन के लोगों द्वारा यरूशलेम में उनकी आस्था के उस स्थल को तोड़ दिया और संदूक गायब हो गया। वर्तमान में यह कहां है इसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं है। लेकिन इसके बारे में कुछ किस्से जरूर कहे जाते हैं। इनके अनुसार यह संदूक जॉर्डन में माउंड नेबो, दक्षिण अफ्रीका, इथोपिया, मिस्र और यूरोप के कुछ अन्य हिस्सो में हो सकता है। इसी अनुमान के अनुसार कुछ लोग मानते हैं कि इसे इथियोपिया का अंतिम सम्राट मेनेलिक उठाकर ले आया था और यह संदूक अब वहां सेंट मैरी चर्च में है।

पिछले साल नवम्बर में इथोपिया के नोबल शांति पुरस्कार सम्मानित प्रधानमंत्री अबी अहमद के सैनिक जब वहां पहुंचे किसी ने खबर फैला दी कि सैनिक संदूक लेने आये है। दोनों और टकराव शुरू हुआ और इस गोलाबारी में 800 लोग मारे गये। हालाँकि इस भयावह नरसंहार की जानकारी अब जाकर दुनिया के सामने आ पाई है क्योंकि इस इलाके का बाहरी दुनिया के साथ संपर्क रोक दिया गया था। इसके लिए इथोपिया के प्रधानमंत्री अबी अहमद ने इंटरनेट के साथ-साथ मोबाइल नेटवर्क पर भी प्रतिबंध लगा दिया था और इथोपिया की सेना को स्थानीय लोगों के खिलाफ तैनात कर दिया।

दरअसल हालीवुड की मूवी में ऐसे बहुत सारे किस्से अक्सर दिखाए जाते है, जिनमें खजाने, पवित्र जल, पवित्र गिलास, लोटा जो भी उनके दिमाग में आये उसे ही पवित्र कहकर एक मूवी बना देते है। इसी क्रम में अस्सी के दशक में आई मूवी रेडर्स ऑफ द लॉस्ट आर्क में भी इसी तरह दिखाया कि पवित्र संदूक इथोपिया में ही रखा गया है। लोगों ने इसे सच समझा जिसका परिणाम अब 800 लोगों को जान चली गयी सिर्फ एक अंधविश्वास के कारण।

ये ईसाइयत का कोई अकेला अंधविश्वास नहीं है इससे पहले साल 1978 में एक पादरी के कहने पर अमेरिका के गुयाना में एक साथ 900 से ज्यादा लोगों ने जहर पीकर आत्महत्या कर ली थी। इस घटना को दुनिया की सबसे बड़ी आत्महत्या माना जाता है। यह घटना जोंसटाउन में घटी थी। तब 900 से ज्यादा लोगों ने एक साथ जहर पी लिया था तथा मौत को गले लगा लिया था। जिन लोगों ने जहर नहीं पिया था उन लोगों को जबरन जहर पिलाया गया था और इस घटना के पीछे जिम जोंस नाम के एक पवित्र पादरी का हाथ था।

वह जिम जोंस खुद को भगवान का अवतार बताता था। खुद को लोगों के बीच

.....बहुत पहले इस्राइलियों ने बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया और उसके अन्दर दस आज्ञाओं के साथ दो पत्थर भी रख दिए। इसके बाद संदूक के बारे में भ्रामक प्रचार किया गया कि यह एक पवित्र संदूक है जो इसराइल वासियों को मिस्र की दासता से मुक्त कराएगा। इसके बाद किंग सोलोमन ने अपने शासन के दौरान जेरूसलम में एक मंदिर का निर्माण किया और इस संदूक को उसमें रख दिया। इस प्रकार सन्दूक को इस्राएलियों द्वारा स्वयं ईश्वर के अवतार के रूप में पूजा जाने लगा। 86 ईसा पूर्व में बेबीलोन के लोगों द्वारा यरूशलेम में उनकी आस्था के उस स्थल को तोड़ दिया और संदूक गायब हो गया। वर्तमान में यह कहां है इसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं है। लेकिन इसके बारे में कुछ किस्से जरूर कहे जाते हैं। .....

प्रसिद्ध करने के लिए उसने जरूरतमंदों की मदद के नाम पर साल 1956 में पीपल्स टेंपल यानि लोगों का एक चर्च बनाया था। अपनी धार्मिकता और अंधविश्वास के दम पर उसने हजारों लोगों को अपना अनुयायी बनाया था क्योंकि जिम जोंस के विचार अमेरिकी सरकार से अलग थे।

वह अपने अनुयायियों के साथ शहर से दूर गुयाना के जंगलों में चला गया था। उसने यहां पर एक छोटा सा गांव बसाया था, लेकिन कुछ दिनों के बाद ही उसकी असलियत लोगों के बीच आने लगी थी। जिम जोंस अपने अनुयायियों से दिनभर काम करवाता था। जब वह अनुयायी रात में थक-हारकर सो जाते थे तो वह उन्हें सोने भी नहीं देता था। इस दौरान वह अपना भाषण शुरू कर देता था। उसके सिपाही घर-घर जाकर देखते थे कि कहीं कोई सो तो नहीं रहा है। यदि कोई सोता मिलता था तो उसे कड़ी सजा दी जाती थी।

जिम जोंस लोगों को गांव से बाहर भी नहीं जाने देता था। उसके सिपाही गांव के चारों ओर पहरा देते रहते थे, जिससे कि कोई वहां से भाग ना सके। अमेरिकी सरकार को उन्हीं दिनों वहां की गतिविधियों के बारे में पता चल गया था। इसके बाद सरकार ने कार्रवाई के बारे में सोचा तो इसका पता जिम जोंस को चल गया इसके बाद उसने अपने सभी अनुयायियों को एक जगह इकट्ठा होने को कहा था।

इस दौरान जोंस ने लोगों से कहा था अमेरिकी सरकार हम सबको मारने आ रही है। इससे पहले कि वो हमें गोलियों से छलनी करें, हम सबको पवित्र जल पीना चाहिए। ऐसा करने से हम गोलियों के दर्द से बच जाएंगे। जोंस ने एक बड़े टब में पहले ही खतरनाक जहर मिलाकर एक सॉफ्ट ड्रिंक बनवा दिया था। इसके बाद उसने अपने लोगों को इसे पीने के लिए दे दिया था। जिसने भी जहरीला ड्रिंक पीने से मना किया था, उन्हें जबरन यह जहर पिलाया गया था। तब इस जहर को पीने से 900 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी जिसमें 300 से ज्यादा बच्चें भी शामिल थे।

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्ती जी का 197वां जन्मोत्सव .....

अनेक अन्य गणमान्य महानुभावों ने कार्यक्रम में भाग लिया

इस अवसर पर आचार्य देव जी की सुंदर भजनों की मधुर प्रस्तुति अत्यंत सारगर्भित एवं प्रेरणा दायक सिद्ध हुई। आपने महर्षि दयानंद सरस्वती की महिमा और उपकारों को स्मरण कराया, साथ ही आर्य समाज की महान उपलब्धियों पर भी भजनों के माध्यम से प्रकाश डाला। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन पर आधारित एक प्रेरक नाटिका का प्रस्तुतीकरण सभी उपस्थित मानव भावों को मंत्रमुग्ध करने वाला विशेष कार्यक्रम था।

कोरोना काल में जिन महानुभावों ने आर्य समाज के अंतर्गत अपनी जान की परवाह न करते हुए मानव सेवा के महान कार्य किए उन सभी को कोरोना योद्धाओं के रूप में आर्य समाज की ओर से सम्मान पत्र प्रदान किया गया। इन महानुभावों में श्रीमती अर्चना बुद्धि राजा श्री राजू आर्य श्री कृष्ण आर्य इत्यादि महानुभाव सम्मानित किए गए।

आर्य समाज कीर्ति नगर से श्रीमती अर्चना बुद्धिराजा, श्री राजू आर्य तथा श्री कृष्ण आर्य, मोहन गार्डन से श्री रामेश्वर दयाल, श्रीमती मनीषा तथा श्री मांधाता सिंह, शाहबाद मोहम्मदपुर से डॉ मुकेश आर्य, अजीत सिंह तथा श्री जगदीश, मायापुरी से श्री रामदेव, श्री राम नारायण तथा श्री रजनीश वर्मा, विकास नगर से श्री सत्यदेव आर्य, श्री रघुवीर सिंह आर्य तथा श्रीमती मीना देवी, सागरपुर से श्री सुखवीर सिंह आर्य, श्रीमती विद्या देवी, श्री राकेश आर्य तथा श्री शीशपाल आर्य, ब्लॉक जनकपुरी से श्री विरेन्द्र सरदाना तथा श्री जगदीश ग्रोवर जी, डी ब्लॉक विकासपुरी से श्री ज्योति ओबरॉय, हस्तसाल से श्री अनूप घई, हरिनगर एवं ब्लाक से श्री महेंद्र आर्य, महावीर नगर से श्री यशपाल आर्य तथा श्री सुधीर आर्य को करोना महामारी के आरंभिक काल में विशेष कार्य करने हेतु करोना सेवा योद्धा सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

उत्तर पश्चिम दिल्ली क्षेत्र – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में उत्तर-पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्य समाज प्रशांत विहार द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 197वें जन्मोत्सव पर रविवार 7 मार्च को प्रात: काल 8:30 बजे से विशेष आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, उत्तरी पूर्वी वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेंद्र गुप्ता जी एवं महामंत्री श्री जोगिंदर खट्टर जी भी उपस्थित रहे, श्री धर्मपाल आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों का गुणगान किया तथा आर्य समाज की उन्नति, प्रगति और सफलता के लिए आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से किया गया, यज्ञ के ब्रह्मा श्री शिव नारायण शास्त्री जी थे। दो बड़े यज्ञ कुंडों पर मुख्य यजमान तथा अन्य आर्यजनों ने आहुतियां देकर स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव किया, यज्ञ के उपरांत सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती सुरेश हसीजा जी के प्रेरक भजन अत्यंत प्रभावशाली और सारगर्भित थे, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन पर और उनके उपकारों को याद करते हुए श्री देव आर्य जी ने बहुत ही मधुर भजन प्रस्तुत किए, श्री नरेश खन्ना जी ने भी ऋषि भक्ति और देशभक्ति के भजनों के माध्यम से प्रेरक संदेश दिया। इस अवसर पर कोरोना काल में आर्य समाज के अंतर्गत अपनी सेवाएं देने के लिए श्री प्रवीण महाजन जी को पीत वस्त्र और महर्षि दयानंद जी का चित्र तथा साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री महाजन जी ने कोरोना काल से लेकर अब तक लगातार लंगर लगाया हुआ है, एक बार वे सैनिक विहार कन्या गुरुकुल में भी जा चुके हैं, इस अवसर पर श्री छविकृष्ण शास्त्री जी के प्रवचन हुए, आचार्य धनंजय जी गुरु विरजानन्द हरिनगर संस्कृतकुलम हरिनगर से विद्यार्थियों के साथ में सम्मिलित हुए। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने भी बहुत सुंदर प्रस्तुति दी।

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 197 वें जन्मोत्सव पर विशेष आयोजन सहर्ष सम्पन्न हुए। 7 मार्च 2021 को प्रात:काल डी.ए.वी. स्कूल श्रेष्ठ विहार के सामने वाले पार्क में 21 कुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें अनेकानेक आर्यजनों के साथ-साथ हमारे पौराणिक भाई भी सपरिवार सम्मलित हए और सबने यजमान बनकर आहुतियां देकर स्वयं को सौभाग्य शाली अनुभव किया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रहमा श्री ब्रह्मदेव वेदालंकार रहे और उन्होंने पूरे विधि विधान से यज्ञ संपन्न कराया। कार्यक्रम के बाद ऋषि लंगर का आयोजन भी सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

इसके उपरांत महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र गौशाला गाजीपुर के प्रांगण में महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव पर विशेष आयोजन किया गया, जिसमें पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अंतर्गत सभी आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उपस्थित हुए। इस अवसर पर यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री शिवा शास्त्री जी वैदिक विद्वान थे। भजन संध्या मैं श्री संदीप जी आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनों से उपस्थित जनसमुदाय भाव-विभोर हो गया, श्री संदीप जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों को भजनों के माध्यम से प्रस्तुत किया और ऋषि भक्ति का वातावरण निर्मित कर दिया।

इस अवसर पर विशेष रूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी उपस्थित थे, आपने कोरोना काल में जिन महानुभावों ने आर्य समाज के अंतर्गत अपने और अपने परिवार की परवाह न करते हुए मानव सेवा के अद्भुत कार्य किए, उन सभी महानुभावों को सम्मान पत्र भेंट किये। जिनमें श्री हरिओम बंसल जी, श्री नरेंद्र गंभीर जी, श्री तरुण ढींगरा जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री अविनाश गुप्ता जी, श्री अरविंद गुप्ता जी, श्री अरुण गुप्ता जी, श्री एस बी सिंघल जी और श्री अनिल गुप्ता जी को सम्मानित किया गया।

आर्य समाज जहांगीरपुरी के मंत्री श्री राम भरोसे जी के नेतृत्व में आर्य वीर दल के छात्र-छात्राओं द्वारा योग आसन एवं मलखम के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिन्हें देखकर उपस्थित आर्य जन बहुत प्रसन्न हुए और सभी ने आर्य वीरों का ताली बजाकर उत्साहवर्धन किया। संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास से परिपूर्ण था, प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ, श्री ताराचंद जी तायल के सौजन्य से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई थी, सभी ने एक दूसरे को बधाई दी और धन्यवाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

8 मार्च 2021 को पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा मंडावली ऊंचे पर गली नंबर 8 में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जन्म दिवस एवं विश्व महिला दिवस के अवसर पर 51 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री शिवा शास्त्री जी थे और सभी क्षेत्रीय आर्यजनों की उपस्थिति में अनेक पौराणिक धर्मावलंबी स्त्री पुरुष और बच्चे सम्मिलित हुए। सभी ने महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन से जुड़ी घटनाओं को स्मरण किया और विश्व महिला दिवस पर एक दूसरे को बधाई प्रदान की।

दक्षिण दिल्ली क्षेत्र – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा आर्य समाज मंदिर श्रीनिवासपुरी के प्रांगण में 8 मार्च 2021 को महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 197 जन्मोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। दोपहर बाद 3:00 बजे यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें सभी आर्यजनों ने आहुति देकर स्वयं को गौरवशाली महसूस किया। इसके उपरांत 4:00 से 5:00 तक श्री कुलदीप आर्य जी के द्वारा मधुर भजनों का गान किया गया, जिससे उपस्थित जनसमूह मंत्रमुग्ध हो गया। उन्होंने अपने भजनों में महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा किया गया समाज सुधार,उपकार, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह और अनेकानेक कुरीतियों को रोकने के लिए जो महर्षि दयानंद ने उपकार किया है, उनकी महिमा का खूब सारगर्भित तरीके से बखान किया। इस कार्यक्रम में श्री आर्य रवि देव गुप्ता जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से जुडी प्रेरक घटनाओं का वर्णन किया, परिणाम स्वरूप उपस्थित सभी लोग लाभान्वित हुए और सभी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा बताए मार्ग पर चलने का मन ही मन संकल्प लिया। सायं 5:30 बजे के पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा उन सभी महानुभावों को सम्मानित किया गया जिन्होंने

– शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

क्रान्ति के सिद्धान्त से सहमत हूं

दक्षिण के गेरीवाल्डी में पण्डित श्री नरेन्द्र जी ज्वरग्रस्त थे तथापि निजाम सरकार ने जुलाई 1947 ई. में बन्दी बना लिया। दोष क्या था? वे राज्य को भारत का अंग बनाना चाहते थे। 4 दिसम्बर 1947 ई. को निजाम की कार पर बम फेंका गया। निजाम उस्मान अली तो बच गया, परन्तु आर्य वीर नारायणराव पवार तत्काल पकड़ लिये गये। कुछ दिन बाद गंगारामजी भी पकड़ लिये गये।

एक दिन केन्द्रीय कारावास के प्रधान अधिकारी मियाँ सैयद हुसैन ने पण्डित नरेन्द्रजी को अपने कार्यालय में बुलाकर पूछा- क्या आप श्री नारायण बाबू और ए. बालरेडी को जानते हैं?

पण्डित नरेन्द्रजी ने बड़े साहस से और क्रान्तिवीरों की शैली में उत्तर दिया- ए. बालरेडी को जानता हूँ, नारायण बाबू को नहीं जानता, हाँ, नारायणराव पवार को जानता हूँ।

श्री सैयद हुसैन ने फिर पूछा-क्या आपको इनकी हिंसात्मक गतिविधियों का पहले से ज्ञान था? पण्डितजी का उत्तर था, नहीं। मियाँजी ने रोब से कहा - सच- सच बताइए, क्योंकि ऊपर से इसकी जाँच का आदेश है।

वीरवर नरेन्द्र जी बोले - इनकी गतिविधियों से तो परिचित नहीं, परन्तु इनकी इस क्रान्ति से सहमत हूँ कि सत्य की ही विजय होती है, अत्याचार की नहीं।

पण्डित जी का यह उत्तर सुनकर उन्हें कारावास में अपने स्थान पर भेज दिया गया।

मृत्यु के जबड़ों में ऐसी निर्भीकता का परिचय देनेवाले उन शूरवीरों का स्मरण करते हुए प्रत्येक आर्य पुत्र-पुत्री को, प्रत्येक देशभक्त को राष्ट्र की अखण्डता तथा स्वतन्त्रता के लिए अपना - अपना दायित्व निभाना होगा, क्रान्ति वीर बनो, तभी देश और धर्म बचेगा।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी द्वारा "महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत के उन्नयन में योगदान" विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न

विश्व के महापुरुषों में अग्रणी हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती - डॉ. सत्यपाल सिंह, वैदिक विद्वान एवं सांसद

भारत की एकता के सूत्रधार एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती - विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 197वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में दिनांक 12 मार्च 2021 को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी मुख्यालय में "महर्षि दयानंद सरस्वती का भारत के उन्नयन में योगदान" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोकसभा सांसद एवं पूर्व राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने की। यह कार्यक्रम दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौड़ के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मुख्य वक्ताओं में दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के उपाध्यक्ष एवं दिल्ली नगर निगम के पूर्व महापौर श्री महेश चंद शर्मा, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के सदस्य श्री सुभाष चंद्र कंखेरिया, सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रशांत शर्मा, आर्य कन्या गुरुकुल की मंत्री श्रीमती सुनीता बुग्गा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के सदस्य एवं प्रसिद्ध समाज सेवी श्री परीक्षित डागर द्वारा किया गया। श्री शिवम् छाबड़ा, उद्योगपति एवं निदेशक, एमएच -1 विशेष रूप से उपस्थित रहे। गणमान्य अतिथियों द्वारा वेद मन्त्रोच्चार से दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

अपने स्वागत भाषण में डॉ. रामशरण गौड़, अध्यक्ष, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और विशेष रूप से मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह का कार्यक्रम में कीमती समय देने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने भारत ही नहीं पूरे विश्व कल्याण के लिए सारा जीवन लगा दिया। सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के महर्षि जी ने तीन मुख्य कार्य किए। पहला उन्होंने पाखण्ड का विरोध किया। दूसरा नारी समाज का उत्थान और तीसरा सामाजिक समानता के लिए कार्य किया। उन्होंने मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी को भारत का गौरव कहा और बताया कि श्री सिंह जी ने पुलिस कमिश्नर के रूप में भी बहुत ख्याति प्राप्त की थी। डॉ. गौड़ ने विशेष रूप से महाशय धर्मपाल जी को याद किया जो आजीवन महर्षि दयानंद सरस्वती जी के पद-चिन्हों पर चलते रहे ।

श्री परीक्षित डागर जी ने मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी का बहुत आभार व्यक्त किया और उनके पुलिस विभाग से राजनीति के सफर से श्रोताओं को अवगत कराया। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा समाज के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को साझा किया ।

डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए अध्यक्ष, दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड का विशेष आभार व्यक्त किया और महर्षि दयानंद सरस्वती को पिछले पांच हजार वर्षों में जितने महापुरुष हुए हैं उन सब में अग्रणी बताया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में लोग स्वार्थ, सम्प्रदाय, अशुद्ध राजनैतिक कारणों से महर्षि को उतना सम्मान नहीं देते जितना देना चाहिए । उन्होंने बताया कि महर्षि दयानंद जी स्वराज्य का मंत्र देने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने सभी से महर्षि दयानंद की प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने और जीवन में धारण करने का आह्वान किया।

उन्होंने बताया कि किसी भी क्षेत्र का कोई भी प्रश्न नहीं जिसका उत्तर - 'सत्यार्थ प्रकाश' में न हो। महर्षि जी ने नारी का उत्थान, स्वदेशी जागरण, समानता के अधिकार के लिए जीवन पर्यन्त कार्य किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि हर समस्या का हल 'सत्यार्थ प्रकाश' में समाहित है।

श्री महेश चंद शर्मा जी ने महर्षि को अद्भुत् प्रतिभा का धनी बताया। उन्होंने बताया कि महर्षि जी ने ही सर्वप्रथम स्वराज की बात की थी। इसके लिए उन्होंने हरिद्वार में महाकुंभ में हिंदी भाषा के लिए महर्षि द्वारा किए गए शास्त्रार्थ का उदाहरण देकर स्वामी जी के जीवन के अहम पहलुओं की चर्चा की। उन्होंने महर्षि जी के हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व्यापक दृष्टिकोण को सबके सामने रखा ।

श्रीमती सुनीता बुग्गा जी ने बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती युगदृष्टा, समाज-सुधारक एवं महान दार्शनिक थे और उन्होंने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश भी डाला। श्रीमती बुग्गा जी ने महर्षि को नारी सम्मान का अग्रणी बताया। महर्षि जी ने अज्ञानता को दूर किया और वेदों का प्रचार-प्रसार किया। उनके हिन्दी प्रेमी होने, विधवाओं का उत्थान, जातिसूचक शब्दों का विरोध, जीव-हत्या को पाप समझना आदि उनके कार्यों को सबके साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि सोलह संस्कारों का जीवन में क्या महत्व है और यज्ञ और गुरुकुल की परंपरा आज के युग में कितनी सार्थक है। साथ ही उन्होंने नई शिक्षा नीति का स्वागत किया और आशा प्रकट की कि इससे स्वामी जी के विचारों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सकेगा। उन्होंने अपनी मां की लिखी कविता, 'तुम अमर हुए हो विष पीकर' सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

श्री प्रशांत शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में स्वामी दयानंद सरस्वती के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान, मूर्तिपूजा का विरोध, वेदों का ज्ञान, नमक आंदोलन की नींव रखने वाले इत्यादि अनेक कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि स्वामी जी सत्य के लिए लड़ते रहे, उनके मन में अपने-पराये का कोई स्थान नहीं था। वे महान देशभक्त थे। उन्होंने कोरोना काल में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों को स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतों से प्रेरित बताया। उन्होंने बताया कि अब भारत के प्रति विदेशों का नजरिया बदला है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री विनय आर्य जी ने सभी वक्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने स्वामी जी को देश का निर्माणकर्ता बताया और महारानी विक्टोरिया के 1857 के चार्टर एक्ट का उदाहरण दिया। भारत के अलग-थलग पड़े राज्यों को एकता के सूत्र में पिरोने का शुभारंभ महर्षि दयानंद सरस्वती ने ही किया था। उन्होंने बताया कि सर्वप्रथम 'स्वदेशी' शब्द का प्रयोग ''सत्यार्थ प्रकाश'' में ही देखने को मिलता है। उन्होंने स्वामी जी को महान युगदृष्टा बताया और पंजाब नेशनल बैंक और एल.आई.सी को उनकी ही देन कहा। जाति प्रथा को हटाना उनकी दूसरी बड़ी देन थी। हिंदू मैरिज एक्ट में बदलाव आर्य समाज की ही देन है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में दुनिया की हर समस्या का वेदों के अनुसार जवाब मौजूद है। स्त्री शिक्षा के लिए देश का पहला महिला हॉस्टल जालंधर में आर्य कन्या गुरुकुल के रूप में स्थापित किया गया। उन्होंने बताया कि गुरुकुल व्यवस्था हमारे जीवन का आधार थी। हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी और रेवाड़ी में पहली गऊशाला आर्य समाज की ही देन है। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानंद सरस्वती को जीवन में 16 बार जहर दिया गया लेकिन वे सत्य से नहीं डिगे ।

श्री सुभाष चंद्र कंखेरिया जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी अतिथियों और श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी से स्वामी जी की शिक्षाओं को अपनाने, यज्ञ और संध्या वंदन करने, गुरुकुल परपंरा अपनाने और ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए प्रेरित किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ इस प्रेरणात्मक एवम् ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का समापन किया गया।

- प्रैस सचिव

गोष्ठी को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह जी, अध्यक्षीय भाषण देते महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं मंचस्थ अतिथिगण तथा उपस्थित महानुभाव

जन्मभूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव में भाग लेने के लिए आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीरों की मोटरसाइकिल यात्रा

महाशय राजीव गुलाटी जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर किया आर्यवीरों को रवाना

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर आयोजित विभिन्न समारोहों की चित्रमय झांकी

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के सहयोग से आयोजित जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर यज्ञ-भजन एवं प्रवचन, कोरोना सेवा कार्यकर्ताओं को सम्मानित करते सभा अधिकारी एवं उपस्थित आर्यजन

आर्यसमाज मल्का गंज में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर 51 कुण्डीय यज्ञ किया गया। इस अवसर पर सम्बोधित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य

महर्षि दयानन्द गौसम्र्धन केन्द्र गाजीपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्यसमाज प्रशान्त विहार दिल्ली में सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा आयोजित सामवेद पारायज्ञ यज्ञ एवं महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

पूर्वी दिल्ली मंडावली में आयोजित 51 कुण्डीय यज्ञ

आर्यसमाज शक्ति नगर, अमृतसर द्वारा निकाली गई शोभा यात्रा

कोटा में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर आयोजित विश्व महिला दिवस समारोह

पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के सहयोग से सनातन धर्म पब्लिक स्कूल में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव में उपस्थित आर्यजन

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

..... Lekh Ram was born in 1858 at Syadpur. All were pleased at his birth, but none was happier than his father, Tara Singh. Even as a boy Lekh Ram appeared to be very intelligent. His parents had high hopes about him. When he was five years old he was sent to the village school. There he was taught Urdu and Persian. At that time Urdu and Persian were the languages ofthe court. Lekh Ram's parents were anxious for him to get a Government position. This was but natural, for in those days even a petty Government position was thought to be more important than any other. .....

On reaching the new place Lekh Ram found that the Mohammadans there were very hostile to him. But he did not mind this. Nor did he hide his love for the Arya Samaj. He drew a flag on the office copy of the Indian Penal Code. On it he wrote the word Om, the sacred word for the Aryans. At the same time, he expressed a wish that the Vedic religion should spread all over the world.

It was at this place that he learnt that the Peshawar Arya Samaj had decided not to publish *The Dharmupdesh.* He tried to persuade them to change their mind. But it was of no avail. However, he continued to write for other papers.

In the end, he made up his mind to give up his job in the Police. He therefore submitted his resignation. His English officers asked him to take it back. But he would not change his mind. His resignation was accepted on the 30th September, 1884, and he became free from the responsibilities and cares of his position.

He was now free to devote himself entirely to the work ofthe Arya Samaj. He found, however, that there were some Arya Samajists who did not live up to their faith. For such people he had no sympathy. He wanted them either to reform or resign the membership of the Arya Samaj. It is said that on one occasion one such person was proposed for the presidentship of the Peshawar Arya Samaj. Pt. Lekh Ram opposed his election, even though he was a very rich man.

Pt. Lekh Ram now divided his time between writing books and delivering lectures. He was especially interested in Islam. He wrote many books about it. About that time a new Mohammadan sect came into being. It was known as the Ahmediya sect of Qadian. Its founder was Mirza Ghulam Ahmed, who claimed to be a prophet. He said that he was the last ofthe line of the prophets. He therefore asked the Hindus, the Mohammadans and the Christians to follow him. He also wrote a book in four parts. In the fourth part he severely criticized theArya Samaj. No sooner did Pt. Lekh Ram read it than he felt indignant. There and then he made up his mind to write a crushing reply to this book. So he spent some time on it and wrote the first part. But he was too busy to get it published. Nevertheless, the book passedfrom one person to another in manuscript. Thus many persons came to read it even before it had been published.

Pt. Lekh Ram then learnt that two Hindus were going to be converted to Islam through the influence ofMirza Ghulam Ahmed. One of these persons belonged to Jammu, the other belonged to Muzatfarnagar. The Pandit went to these places and saw both these persons himself. He had long talks with them on religious matters. In the end, he succeeded in persuading them not to give up their faith.

He also took in hand two other things at this time. He did this under instructions from Swami Dayanand himself. One was that he should get the memorial for the protection of the cow signed by as many persons as possible. The other was that a memorial should be sent to the Government to permit the teaching ofHindi in schools. Some time after this Swami Dayanand died. Lekh Ram naturally felt sad at his death. But he also realized that he should redouble his efforts for the success of his master's mission.

For many years after this Pt. Lekh Ram continued to move from one place to another to spread the message of the Arya Samaj. He first visited Rawalpindi. There he delivered a lecture on the occasion of the anniversary oftheArya Samaj. Since he was not as yet a practised speaker he wrote out what he had to say. The subject of his lecture was very interesting. He said that the Vedic religion was a world religion. To prove his point he cited many examples. All these showed the extent of his learning as well as his faith in his own mission.

From Rawalpindi he went to Gurdaspur. There he threw out a Challenge to Mirza Ghulam ahmed to have a discussion with him on religious matters. But the did not receive a reply. He then delivered some very stirring speeches, in which he tried to show the superiority of the Vedic religion over some other religions.

In the same way, he visited Amritsar, Lahore and Peshawar, wherever he went he made it a point to expose the new Qadian sect. He also wrote many letters to Mirza Ghulam Ahmed asking him to have a discussion with him. To one of his letters Mirza Sahib replied, "I do not want to discuss things with ordinary persons. If any influential member of!he AryaSamaj wants to have any discussion with me, he . is welcome." But even this did not dishearten Pt. Lekh Ram. He still went on writing to his opponent. To one of his letters he at last got the following reply, "Qadian is not far off. You can come here and settle matters personally."

At this Pt. Lekh Ram went to Qadian. There he met Mirza Sahib quite a number of times. At all these meetings heated discussions took , place between the two. But these led to nothing. Only one good thing came of them. Some of the Hindu followers of Mirza Sahib left his fold.

By this time Lekh Ram had established a reputation as a fearless, courageous and able speaker. He was, therefore, in great demand. When Mirza Ghulam Ahmed went to Hoshiarpur, Pt. Lekh Ram was sent for. There a very heated discussion took place, which lasted for many hours. This gave Mirza Sahib an opportunity for publishing another book against the Arya Samaj. To this Pt. Lekh Ram wrote a spirited reply. In addition he wrote many short pamphlets exposing the non- Vedic religions and sects.

That Pt. Lekh Ram stood very high in the estimation ofthe Arya Samajists is proved by many things. It is sufficient to refer to one such testimony. *TheArya Patrika,* an English weekly, wrote at that time, "Pt. Lekh Ram is one of the noblest members ofthe Lahore Arya Samaj. He has dedicated himselfto the work oftheArya Samaj. He is one of the finest scholars of Arabic and Persian.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — देश-देशान्तर प्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
103. भवानेतान् जानातीमे महाविद्वांसः सन्ति।	आप इनको जानते हैं ये बड़े विद्वान् हैं।
104. किन्नामान एते कुत्रत्याः खलु ?	इनके क्या-क्या नाम हैं और ये कहां-कहां के रहने वाले हैं ?
105. अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी।	यह यज्ञदत्त, काशी में निवास करता है।
106. विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रवास्तव्यः।	यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में वसता है।
107. सोमदत्तोऽयं माथुरः।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है।
108. अयं सुशर्मा पर्वतीयः।	यह सुशर्मा पर्वत में रहता है।
109. आयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति।	यह आश्वलायन दक्षिणी है।
110. अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते।	यह जयदेव पश्चिम देशवासी है।
111. अयं कुमारभट्टो बाङ्गो विद्यते।	यह कुमारभट्ट बंगाली है।
112. अयं कापिलेयः पाताले निवसति।	यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में रहता है।
113. अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः।	यह चित्रभानु हिमालय से उत्तर हरिवर्ष अर्थात् यूरोप में रहता है।
114. इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ।	ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं।
115. अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी।	यह सुमित्रा गन्धर अर्थात् काबुल कान्धर का रहने वाला है।
116. अयं सुभटो लङ्काजः।	यह सुभट लंका में जन्मा है।
117. इमे पंच सुवीरातिबलसुकर्मसुधर्मशतधन्वानो मत्स्याः।	सुवीर, अतिबल, सुकर्मा, सुधर्मा और शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहने वाले हैं।
118. एते मया आमन्त्रिताः स्वस्वस्थानादागताः।	ये सब मेरे बुलाने पर अपने-अपने घर से आये हैं।
119. इमे शिवकृष्णगोपालमाधवसुचन्द्रप्रक्रमभूदेव चित्रसेनमहारथानवात्रत्याः।	शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, सुचन्द्र, प्रक्रम, भूदेव, चित्रसेन और महारथ ये नव इस (मध्य) देश के रहने वाले हैं।
120. अहोभाग्यं मेऽस्ति त्वत्कृपयैतेषामपि समागमो जातः।	मेरा बड़ा भाग्य है कि आपकी कृपा से इन सत्पुरुषों का भी मिलाप हुआ।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी .....

कोरोना के संकट काल में आर्य समाज के अंतर्गत अपनी अद्भुत और अनमोल सेवाएं देकर मानवता का परिचय दिया, ज्ञात हो कि उस समय आर्य समाज ने गरीब निध ान लोगों को भोजन, वस्त्र, राशन सामग्री आदि से सहायता की थी। इन महानुभावो में श्री सतीश चड्ढा जी महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा, श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी जी, श्री राकेश भटनागर जी, श्री रवि देव गुप्ता जी, श्री विद्या प्रसाद मिश्र जी, श्री सुशील आर्य जी इत्यादि महानुभावों को सम्मानित किया गया, सभी का अभिनंदन कर सम्मान पत्र भेंट किया गया। श्री विद्याप्रसाद मिश्र जी ने भी अपने लघु उद्बोधन में महर्षि की शिक्षाओं से लोगों को अवगत कराया, इस कार्यक्रम की उपस्थित सभी लोगों ने प्रशंसा की, प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ,अंत में सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण कर प्रस्थान किया।

उत्तरी दिल्ली - महर्षि दयानंद सरस्वती जी के 197वे वां जन्मोत्सव पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत उत्तरी दिल्ली के संवर्धको की टीम के विशेष प्रयासों द्वारा आर्य समाज मलकगंज में 51 कुंडीय वृहद महायज्ञ का आयोजन 7 मार्च 2021 को सायं 4 से 6 बजे तक महर्षि दयानंद के कार्यों को याद करते हुए किया गया।

वर्तमान में दिल्ली सभा के प्रचारक प्रकल्प के संवर्धकों द्वारा घर घर यज्ञ- हर घर यज्ञ की वृहद योजना पर कार्य चल रहा है। इस योजना के अंतर्गत झुग्गी-झोपड़ीयों, कालोनियों इत्यादि में वैदिक विचारधारा व भारतीय संस्कृति को यज्ञ के माध्यम से विस्तार देने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही लोग नशे, पाखंड, व अंधविश्वास से दूर रहें इसका संदेश भी दिया जाता है। यहां के स्थानीय लोग बताते हैं कि इस प्रकार का आयोजन कभी भी इससे पूर्व इस क्षेत्र में नही हुआ है।

इस महायज्ञ की विशेषता थी कि यहां के स्थानीय लोगों ने ही इस कार्यक्रम को सफल किया। महायज्ञ की सभी व्यवस्था, जैसे, यज्ञ के लिए घी, सामग्री, समिधा, प्रसाद, टेंट, साउंड, इत्यादि की अधिकांश व्यवस्था स्थानीय लोगो ने मिलजुल कर की।और अपने सामर्थ्य से दान भी दिया। यहां के स्थानीय लोगों में अधिकांश, माध्यम वर्गीय व दलित समाज के लोग रहते हैं। प्रारंभ में इस कार्यक्रम का विरोध भी लोगों ने किया। जिस पर इस क्षेत्र के संवर्धकों ने उनके बीच जाकर उनको समझाया, और यज्ञ की महिमा को बताया, जिससे प्रभावित होकर स्थानीय लोगों बहुत उत्साह से यज्ञ में भाग लिया। 51 कुंडीय यज्ञ में से 45 कुंड पर जो यज्ञमान बने थे, वो पहली बार यज्ञमान बन रहे थे। इस यज्ञ की विशेषता थी कि यज्ञ से पूर्व 95% से अधिक लोग जो इस कार्यक्रम में आये थे, वो आर्य समाज की विचारधारा को नकारात्मक रूप से जानते थे। परंतु यज्ञ के उपरांत सभी लोग बहुत उत्साही हुए और संकल्प लिया कि भविष्य में हम सभी मिलकर इस प्रकार के यज्ञ करेंगे, जिसकी सारी व्यवस्था हम सभी मिलकर करेंगे। साथ ही अपने परिवारों में भी यज्ञ कराएंगे। कार्यक्रम के अंत में मशाल द्वारा नशे के विरुद्ध जो कार्य किया जा रहा है उसको एक वीडियो के द्वारा लोगो को समझाने के लिए दिखाया गया। कार्यक्रम में यज्ञ ब्रह्मा के रूप में उत्तरी दिल्ली के संवर्धक सत्यप्रिय शास्त्री जी थे। यज्ञ व्यवस्था में मुख्य सहयोगी लक्ष्य आर्य जी, सोनू आर्य जी, करन आर्य जी थे। गौरव आर्य जी द्वारा ऋषि दयानंद जी को सुंदर भजनों द्वारा श्रद्धासुमन समर्पित किये।

मुख्य अतिथि के रूप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी थे, जिन्होंने ऋषि को याद करते हुए सभी को जीवन मे उन्नति हेतु यज्ञ को अपनाने के लिए प्रेरणा दी।आमंत्रित अतिथि के रूप में उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली के प्रधान सुरेंद्र आर्य जी, प्रसिद्ध समाज सेवी वेदप्रकाश आर्य जी, बिरला लाइन समाज के प्रधान संजीव बजाज जी, सोहनगंज आर्य समाज के प्रधान नेत्रपाल जी, आर्यपुरा समाज के पुरोहित डॉ रामेश्वर जी, बिरला लाइन के पुरोहित आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के उपमंत्री पवन आर्य जी, यशपाल आर्य, वाचस्पति शास्त्री जी, इत्यादि बहुत से अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए उपस्थित थे। आये हुए सभी अतिथियों ने यज्ञ में आहुति दी और कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी को बधाई दी। सम्पूर्ण कार्यक्रम मलकगंज आर्य समाज के प्रधान सुभाष कोहली जी, मंत्री अश्विनी आर्य जी व कोषाध्यक्ष बृहस्पति आर्य जी, मशाल के संयोजक विकास आर्य व सन्नी भारद्वाज जी के निर्देशन में सफलता पूर्वक संचालित हुआ। मंच संचालन बृहस्पति आर्य द्वारा किया गया।

अमृतसर (पंजाब) - आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर ने आज शहर की अन्य आर्यसमाजों - आर्यसमाज शक्ति नगर, पुतली घर, लक्ष्मण सर, लारेंस रोड, श्रद्धानंद बाजार, हरिपुर, नवांकोट , दयानंद धाम के साथ मिल कर सवामी दयानंद जी के जन्म और बोधोत्सव के उपलक्ष्य में प्रभात फेरी का आयोजन किया। इस में बहुत से लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। महिलायें और बच्चों में जोश देखने योग्य था। अनगिनत स्थानों पर लोगों ने प्रभात फेरी का फूलों से स्वागत किया और खाने का समान बांटा, ऐसा लग रहा था जैसे सारा क्षेत्र आर्य समाज के रंग में रंग गया हो।

महर्षि दयानंद जन्मोत्सव एवं विश्व महिला दिवस मनाया - आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में महर्षि दयानंद सरस्वती सेवा समिति द्वारा महर्षि दयानंद जन्मोत्सव एवं विश्व महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समिति के मंत्री श्री राकेश चड्ढा ने बताया कि कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर निगम कोटा दक्षिण की आयुक्त कीर्ति राठौर, मुख्य वक्ता आर्य विदुशी डा. सुदेश आहूजा, विशिष्ट अतिथि सीनियर प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष एनाटोमी मेडिकल कॉलेज की डॉ प्रतिभा जायसवाल, वीरांगना एवं समाज सेविका बबिता शर्मा एवं मूक बधिर बाल विद्यालय की सर्वेश्वरी रानीबाला तथा कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती रीटा गुप्ता का केसरिया साफा व रेशमी पटका पहनाकर गायत्री मंत्र के साथ स्वागत किया गया।

मुख्य अतिथि कीर्ति राठौर ने अपने संबोधन में कहा कि परिवार में माता को चाहिए कि वे अपने बेटे व बेटियों को समान व्यवहार व संस्कार दें।

समाज में महिला व पुरुष दोंनों की समान भूमिका महत्वपूर्ण है। ये दोनों अपनी शक्ति को पहचानें तथा सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें। सामाजिक संस्थाओं को भी इसमें अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। महर्षि दयानंद सरस्वती ने महिला व पुरुष की समान शिक्षा व अधिकारों की बात कही है। उन्होनें कहा कि महर्षि दयानंद के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

मुख्य वक्ता वेद विदुशी डा. सुदेश आहूजा ने कहा कि स्वामी दयानंद महिला शिक्षा व समानता के प्रथम सूत्रधार थे। महर्षि दयानंद के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होनें कहा कि महर्षि पुनर्जागरण एवं समाज सुधार के अग्रदूत थे। उन्होनें पर्दा प्रथा, बाल विवाह, बेमेल विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों का विरोध किया तथा विधवा विवाह और नारी शिक्षा पर बल दिया। स्वामीजी स्वभाषा, स्वधर्म, स्वराज और स्वदेशी चारों के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। उनके द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश ने क्रांति का शंखनाद किया। विशिष्ट अतिथि डा. प्रतिभा जायसवाल ने बताया कि महर्षि दयानंद ने कहा कि नारी के पिछड़ेपन का कारण उनकी अशिक्षा है। अत: वे नारी शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। उनके विचारों के प्रभाव से महाराष्ट्र कोंकड़ की रमाबाई ने स्त्री शिक्षा के लिए लोगों को जागृत किया। उन्होनें कहा कि महर्षि दयानंद के विचारों से मानव जाति का उत्कर्ष होगा।

समाज सेविका श्रीमती बबीता शर्मा ने कहा कि महिलाओं को कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी। मेरा जीवन उसका उदाहरण है।

- संवाददाता

शोधग्रन्थ हेतु आर्य बलिदानियों का जीवन परिचय भेजें

भारतीय स्वतंत्रता एवं हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के पश्चात जो आर्य युवा, उपदेशक, समाज सुधारक, संन्यासी तथा चीन, पाक युद्ध में शहीद हुए हैं, उन योद्धाओं का नाम, पता निम्नलिखित फोन पर अवश्य बताएं, जिससे कि उन अमर हुतात्माओं, बलिदानियों के जीवन की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सके। इस पुनीत कार्य में इतना ध्यान अवश्य रखें कि हुतात्मा आर्य परिवार अथवा आर्य विचारों से प्रेरित थे। इस सम्बंध में लेखक का विस्तृत एवं शोधपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है। उस ग्रन्थ में उन शहीदों का सम्मान सहित जीवन परिचय दिया जाएगा।

- डॉ. चन्दशेखर लोखण्डे

सीताराम नगर, लातूर - 413351 (महाराष्ट्र) मो. 9922256597, 7028685442

शोक समाचार

आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक को पितृशोक

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध युवा वैदिक विद्वान् एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा बलिया के प्रधान आचार्य ज्ञान प्रकाश वैदिक के पिता श्री द्वारिका सिंह आर्य का 4 फरवरी 2021 अकस्मात निधन हो गया। वे वेद प्रचार सेवा समिति और आर्य समाज सहतवार के सक्रिय कार्यकर्ता तथा निष्ठावान् ऋषि भक्त थे। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधिविधान से उनके ऋषि भूमि में अंत्येष्टि वेदी बनाकर संपन्न कराया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 फरवरी को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 मार्च, 2021 से रविवार 21 मार्च, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18-19/03/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 मार्च, 2021

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री सुदर्शन शर्मा जी पुन:प्रधान एवं श्री प्रेम भारद्वाज जी पुन: मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर (पंजाब) का साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन (7 मार्च, 2021 से 6 मार्च, 2024तक) दिनांक 7 मार्च, 2021को सम्पन्न हुआ। इस निर्वाचन में **श्री सुदर्शन कुमार शर्मा जी** को **सर्वसम्मति से पुन: प्रधान** निर्वाचित किया गया। नव निर्वाचित प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने प्रस्ताव सं. 3 में प्रदत्त अधिकारों के अनुसार निम्नांकित महानुभावों को मनोनीत/निर्वाचित घोषित किया।

श्री सुदर्शन शर्मा (प्रधान)

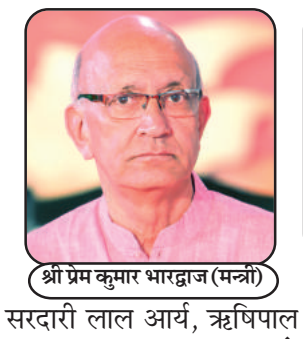

श्री प्रेम कुमार भारद्वाज (मन्त्री)

श्री सुधीर कु. शर्मा (कोषाध्यक्ष)

उप प्रधान - सर्वश्री सरदारी लाल आर्य, ऋषिपाल एडवोकट, श्रीमती राजेश शर्मा, देवेन्द्र नाथ शर्मा, नरेश कुमार, स्वतन्त्र कुमार, एवं श्री मुनीष सहगल।

महामन्त्री - श्री प्रेम कुमार भारद्वाज, **मन्त्री** - सर्वश्री विजय सरीन, विपिन शर्मा, सुदेश कुमार, रणजीत आर्य, ऋषिराज शर्मा, विनोद भारद्वाज, एवं श्री विजय साथी। **कोषाध्यक्ष** - श्री सुधीर कुमार शर्मा। **रजिस्ट्रार** - अशोक पुरुथी एडवोकट।

समस्त निर्वाचित पदाधिकारियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर का निर्वाचन सम्पन्न

डॉ. श्रीगोपाल बाहेती जी प्रधान एवं श्री सोमरत्न आर्य जी मन्त्री बने

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास (भिनाय कोठी), महर्षि दयानन्द मार्ग, (जयपुर रोड), अजमेर (राजस्थान) का साधारण सभा अधिवेशन 4 मार्च, 2021 को न्यास भवन में वर्चुअल रूप से सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से **प्रधान** - डॉ. श्रीगोपाल बाहेती जी, **मन्त्री** के रूप में पुन: श्री सोमरत्न आर्य जी एवं **कोषाध्यक्ष** - श्री सुभाष नवाल जो को चुना गया। इसके साथ ही **संरक्षक** - श्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, महाशय राजीव गुलाटी जी, **उप प्रधान** - श्री तुलसी सोनी जी, **संयुक्त मन्त्री**- श्री जयकिशन पारवानी को निर्वाचित घोषित किया गया।

पृष्ठ 2 का शेष

ईसाइयत का काल्पिनिक ....

भारत के बाहर नहीं भारत में भी पॉल बाबा भगवान यीशू के नाम पर कृपा का कारोबार करते रहे। वे जब कृपा के कारोबार का प्रचार करते हैं, तो दावा करते हैं कि उन्हें प्रभु यीशू की काया में प्रवेश होने का अनुभव होने लगता है। वे जिन लोगों पर कृपा करते हैं, उनका यदि कोई व्यापार है, तो उसमें हिस्सेदारी भी मांगते, ऐसा करते करते पोल ने दक्षिण भारत में ईसायत को तो फैलाया ही साथ हजारों करोड़ का कारोबार भी खड़ा किया। इसी कारण इन अंधविश्वासों को वेटिकन द्वारा अब भारत में फैलाने की पूरी तैयारी चल रही है इसके लिए इन्होंनें भारतीय मूल की नन सिस्टर अल्फोंजा और मदर टेरेसा को संत की उपाधि से इसलिए अलंकृत किया है कि इनका नाम लेने से रोगी ठीक हो जाते हैं। भले ही ये दोनों खुद बुरी तरह बीमार होकर मरी हों। खैर हो सकता है आगे यहाँ भी कोई पवित्र संदूक या बक्सा बताया जाने लगें और अंधविश्वास में पागल लोग उसकी पूजा करने लगें और इथोपिया की तरह मरने मारने पर उतारू होने लगें।

- *सम्पादक*

खेद व्यक्त

सभी पाठकों के समक्ष खेद व्यक्त किया जाता है कि प्रिटिंग मशीन (प्रैस) में गड़बड़ी आ जाने के कारण दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक सं. 16 दिनांक 8 मार्च, 2021 से 14 मार्च, 2021 प्रकाशित नहीं हो सका, इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

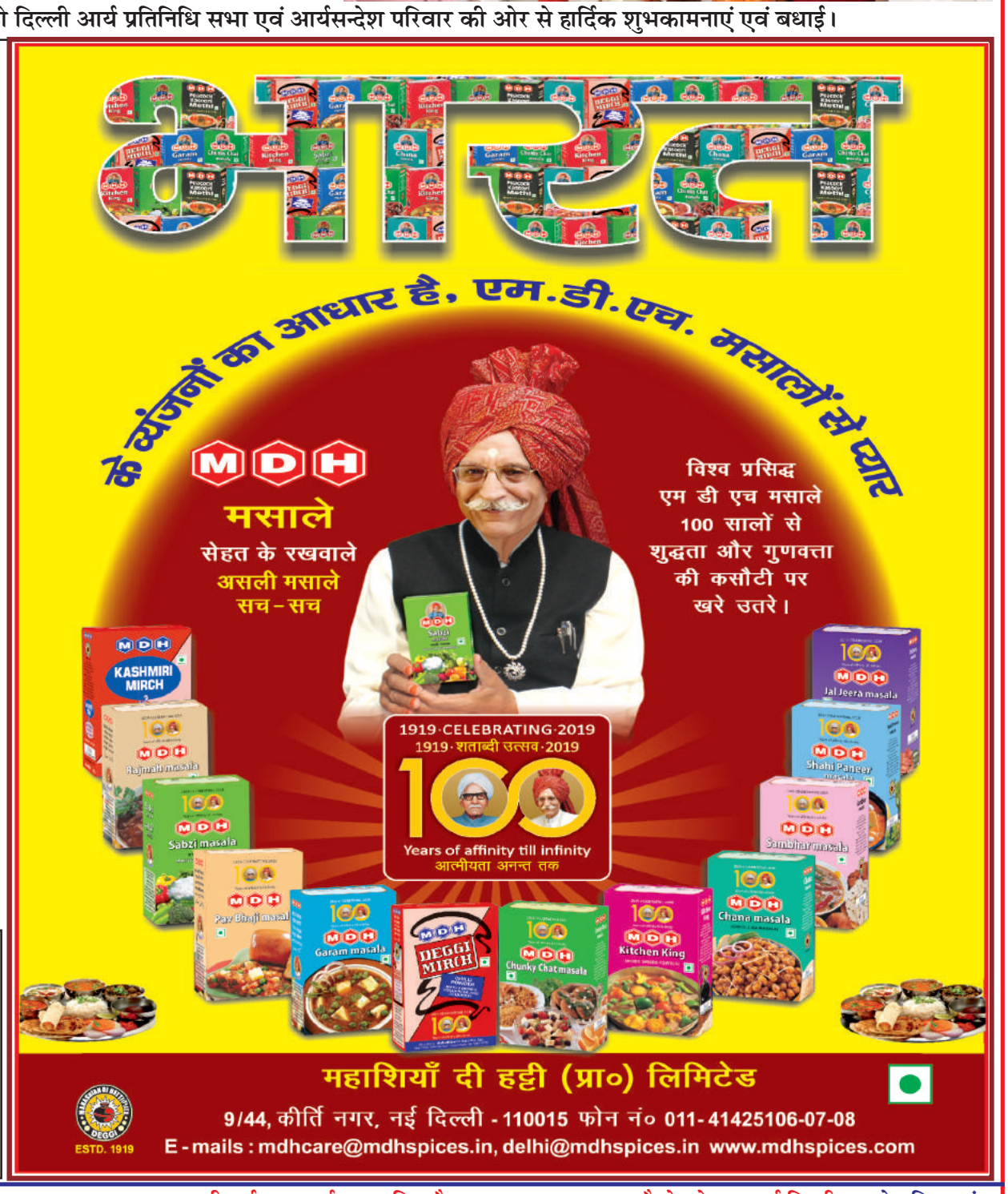

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह